Open Transparent Peer Reviewed & Refereed Journal

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

शोध-ऋतु

7

सम्पादक
डॉ. सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव

पत्राचार हेतु कार्यालयीन पता -
डॉ. सुनील जाधव,
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,
हनुमान गढ़ कमान के सामने,
नांदेड़-४३१६०५, महाराष्ट्र

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

अनुक्रमणिका

1.हिन्दी निबंधों में वर्णित शिव–चरित्र..... 6
–*सुजाता कुमारी*..... 6
2.निराला का साहित्य और दलित..... 9
–*रोहित यादव*..... 9
3.स्त्री चेतना की प्रखर गूँज–अनगूँज : "तुम्हारी रोशनी" उपन्यास के संदर्भ में 11
–*डॉ.रत्ना कुशवाह* 11
4.व्यवस्था की विसंगतियों के कुशल चितेरे : श्रीलाल शुक्ल.....15
–*डॉ.विजय कलमधार*.....15
5.गुजरात के लोकनाट्य भवाईकला के मूलभूत लक्षण.....17
–*पिनल पढ़ियार*.....17
6.मध्य प्रदेश में किये जा रहे कार्यों का विश्लेषण.....19
–*डॉ.कुमुद श्रीवास्तव* 19
7.महादेवी वर्मा के काव्य में मानव जीवन का चित्रण 22
–*लखी कुमारी*.....22
8.पूर्वी पाकिस्तान के शरणार्थियों की समस्याओं के संदर्भ में कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए उपन्यास.....24
–*[1]तसनीम खान, [2]प्रो. ज्ञानतोष कुमार झा*.....24
9.शरणार्थी जीवन के परिप्रेक्ष्य में रेत समाधि उपन्यास.....28
–*[1]तसनीम खान, [2]प्रो. ज्ञानतोष झा*.....28
10.शारीरिक छवि पर सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों का प्रभावः एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण 31
–*छाया कुमारी*.....31
11.वैचारिक संघर्ष के सागर में गोते लगाता राजहंस.....34
– *प्रा.डॉ.पी.एम. भुमरे*.....34
12.गांधारी : पतिभक्ति, वात्सल्य व अनास्था का त्रिकोण.....38
–*डॉ.मोनिका नरेश* 38
13.आदिवासी अस्मिता और रणेन्द्र का कथा–साहित्य.....40
–*डॉ.जया सिन्हा*.....40
14.हिन्दी सिनेमा और स्वातन्त्रयोत्तर भारतीय साहित्य 42
–*सीमा खड़कवाल* 42
15.रेणु और अनामिका के प्रमुख औपन्यासिक स्त्री पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन.....45
–*डॉ.स्वर्णिम शिप्रा*.....45
16.मनोहर श्याम जोशी : संवेदना और शिल्प.....48

28.फणीश्वरनाथ रेणु की रसप्रिया कहानी में आंचलिकता

–प्रा.डॉ. अमोल रमेश इंगले
हिंदी विभागाध्यक्ष,
शिवनेरी महाविद्यालय शिरूर अनंतपाल जिला. लातूर.

कालजयी रचनाकार फणीश्वरनाथ रेणु जी हिंदी कथा साहित्य के एक अग्रणी कथाकार है। हिंदी कथा साहित्य जगत में प्रेमचंद जी ने जिस ग्रामीण जीवन का परिचय दिया है उसे बड़ी कुशलता के साथ रेणु जी ने व्यापकता प्रदान की है। जिसकी बदौलत हिंदी कहानी साहित्य के क्षेत्र में ग्रामीण आंचलिक कहानीकार के रूप में फणीश्वरनाथ रेणु हमारे सामने आते हैं। फणीश्वरनाथ रेणु बिहार के पूर्णिया आँचल के रहने वाले थे ।पूर्णिया की परंपरा लोकजीवन की सहजता मधुरता आंचलिकता रीति–रिवाजों से अच्छी तरह से वाकिफ ही नहीं बल्कि उनमें पूरी तरह से घुलमिल गए थे। वे वहां की लोक कथाएं और ग्रामीण जीवन को ही अपना जीवन मानते थे। इसीलिए उनकी कहानियों में बिहार के पूर्णिया जिले की मिट्टी की सुगंध आती है। वे मिट्टी से जुड़े रचनाकार है। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से गांव की लोक कथाएं, लोक गीत, लोक नृत्य, अंधविश्वास, मिथक, किंवदंतियाँ और लोक विश्वास के साथ भारतीय ग्रामीण जीवन हर पहलू का वर्णन बहुत ही सुक्ष्मता से तथा सुंदर ढंग से किया है। रेणु जी ने पाँच दर्जन से अधिक कहानियों की रचना की है जिसमें उन्होंने गांव की सामूहिक प्रगति का सपना देखते हुए जातीयता को मिटाने के लिए भी पूरी कोशिश की है। सामाजिक व्यवस्था में बदलाव लाने के लिए अंधविश्वास, शिक्षा, औद्योगीकरण, आधुनिकीकरण को प्रधानता दी है। वे खुद कहते हैं " मैंने जमीन, भूमिहीनों और खेतिहर मजदूरों की समस्याओं को लेकर बात की। जातिवाद भाई भतीजावाद और भ्रष्टाचार की पनपती हुई बेल की ओर मात्र इशारा नहीं किया था, इसे समूल नष्ट करने की आवश्यकता पर भी बल दिया था"1

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद रेणु जी ग्रामीण जीवन पर लिखने वाले एक सशक्त यथार्थवादी कहानीकार है। वे अपनी कहानियों के माध्यम से गांव का दर्द, बेचैनी और संघर्ष का चित्रण करने के लिए ऐसे पात्रों का निर्माण किया है जो अब तक हमने देखे नहीं हैं। गांव में पले बड़े रेणु जी ने ग्रामीण जीवन के निजी अनुभव को बड़ी सहजता से अपनी कहानियों में प्रमाणित किया है। इस संदर्भ में डॉ. सुवास कुमार कहते हैं कि, " रेणु की छाती में हर वक्त गांव धड़कता था और उसकी धड़कन को उन्होंने अपनी रचनाओं में कागजों पर उतार दिया है।"2 रेणु जी ने ग्रामीण जीवन का वास्तविक परिचय देते हुए गांव, मिट्टी, आँचल को ही प्रधानता देते हुए विविध मनोरंजन के साथ गुप्त प्रेरणा प्रदान करते हुए लेखक स्वयं कहते हैं कि, " इसमें फूल भी है शूल भी है, धूल भी है गुलाल भी है, कीचड़ भी है चंदन भी है, सुंदरता भी है कुरूपता भी है, मैं किसी से भी दामन बचाकर निकल नहीं पाया" रेणु जी अपनी कहानियों के माध्यम से समाज एवं साहित्य पर एक प्रभाव पैदा करते हैं।

किसी भी प्रदेश को अच्छी तरह से जानने समझने के लिए उस प्रदेश का साहित्य पढ़ना आवश्यक है। क्योंकि साहित्यकार अपने साहित्य में उस प्रदेश तथा समाज की सारी विशेषताएं अपने साहित्य में चित्रित करता है। रेणु जी के कथा साहित्य में भी बिहार के ग्रामीण लोक जीवन का बड़े ही सूक्ष्मता से चित्रण हुआ है। कारण वे अपने प्रदेश तथा गांव के प्रति बेहद प्रेम करते थे इसीलिए उन्होंने अपने संपूर्ण साहित्य में ग्रामीण जीवन के आचार– विचार, रहन–सहन, खानपान, रीति रिवाज, संस्कृति, भाषा आदि का अंकन किया है। रेणु जी ने अपनी कहानियों में ग्रामीण आंचलिक जीवन को बड़े ही करुणा और सहानुभूति से चित्रित किया है। रेणु जी की 'रसप्रिया' कहानी अब तक की चर्चित सभी आंचलिक तत्वों से परिपूर्ण कहानी है। इसमें मिथिलांचल से छुटती हुई लोक संस्कृति की परंपरा का चित्रण किया है। रसप्रिया एक विशिष्ट आंचल की विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान है जिसे रेणु जी ने सृजनात्मक रूप देखकर एक व्यापक समस्या के साथ जुड़ा है और वह समस्या है आर्थिक मूल्यों की चपेट में सांस्कृतिक, वैयक्तिक और कलात्मक मूल्यों का ध्वस्त हो जाना। साथ ही इसमें प्रदेश की रीतियों और अंधविश्वासों को प्रस्तुत करते हुए इन्हीं परंपराओं के ध्वस्त होने की पीड़ा को भावात्मक, संवेदनात्मक एवं हृदयस्पर्शी ढंग से चित्रित किया है।

प्रस्तुत कहानी का पंचकौडी मिरदंगिया पिछले पंद्रह साल से म्रदंग लेकर गांव– गांव जाकर विद्यापति के पद गा कर नाचता तथा मृदंग बजाता था और उसी से अपनी रोजी–रोटी चलाता था। रसप्रिया गान और विद्यापति नाच के लिए कभी मशहूर मिरदंगिया आज एक अधपगला के नाम से जाना जाता है। पहले गांव में उसे शुभकार्यों में बुलाया जाता था वह अपने साथियों के साथ जाकर बजाता था जिससे इस क्षेत्र में उसका काफी नाम हुआ था। लेकिन समय के साथ लोग बदल गए और ग्रामीण जीवन और कलाकार के प्रति लोगों में रुचि नहीं रही और लोग मिरदंगिया को लेकर कहने लगे," हां, यह जीना भी कोई

जीना है? निर्लज्जता है, और थेथराई की भी सीमा होती है।..... पंद्रह साल से वह गले में मृदंग लटकाकर गांव–गांव घूमता है, भीख मांगता है।..... दाहिने हाथ की टेढ़ी उंगली मृदंग पर बैठती ही नहीं है, मृदंग क्या बजाएगा। अब तो था तिंग था तिंग'भी बड़ी मुश्किल से बजता है।"3 मिरदंगिया मिरदंग बजाकर नाचता था गाता था। एक दस– बारह साल का चरवाहा मोहना आता है जो विद्यापति की पदावली भी गाता है। जो मिरदंगिया को रसप्रिया बजाने को कहता है। साथ ही वह कहता है कि, तुम्हारी उंगलियाँ रसप्रिया बजाते समय टेढ़ी हो गई थी न? मोहना को देखकर मिरदंगिया की क्षीण ज्योति आंखों में एक प्रकार की चमक निर्माण हो जाती है ।क्योंकि उसकी नजर एक धूल में पड़ी हुई कीमती पत्थर पर पड़ी तो उसकी आंखों में चमक दिखाई देती है। क्योंकि मिरदंगिया को इन लोकगीतों को गाने वाले तथा आगे की पीढ़ी तक ले जाने वाले कलाकार की तलाश थी। जो मोहना के रूप में उसकी तलाश पूरी हो गई थी। क्योंकि मिरदंगिया को चिंता है कि कहीं समय के साथ यह लोकगीत भी, गानेवाले भी चले जाएंगे तो क्या होगा "..... जेठ की चढ़ती दोपहरी में खेतों में काम करने वाले भी अब गीत नहीं गाते हैं।..... कुछ दिनों के बाद कोयल भी कुकना भूल जाएगी क्या? ऐसी दोपहरी में चुपचाप कैसे काम किया जाता है। पाँच साल पहले तक लोगों के दिल में हुलास बाकी था।..... पहली वर्षा में भीगी हुई धरती के हरे– भरे पौधों से एक खास किस्म की गंध निकलती है। तपती दोपहरी में मोम की तरह गल उठती थी– रस की डाली। वे गाने लगते थे बिरहा, चाँचर, लगनी। खेतों में काम करते हुए गानेवाले गीत भी समय–असमय का खयाल करके गाए जाते हैं।"4 इस प्रकार रेणुजी ने लोक संस्कृति का महत्व समझाते हुए गांव समाज की उदासीनता के कारण लोक कलाएं, लोकगीत धीरे–धीरे नष्ट होने की चिंता व्यक्त की है। मिरदंगिया खुशी से बीड़ी पीना शुरू करता है। वह वैद्य भी है छोटी मोटी बीमारी का इलाज भी करता है। अपने साथ कुछ दवा भी रखता है। मिरदंगिया मोहना को रसप्रिया सिखाना चाहता है वह मोहना का इंतजार करता है। क्योंकि मोहना नृत्य में माहिर था इसीलिए वह उसे मृदंग बजाकर ना चाहता था, गाता था। लेकिन जब यह बात मोहना के मां को मालूम हुई तो वह उसे तो वह उसे उसके पास नहीं जाने देती थी। मोहना को भी यह डर था कि कहीं उसके दोस्त मां से उसकी शिकायत ना कर दे।मोहना के इस व्यवहार से मिरदंगिया दुखी हो जाता है। मोहना का कहना था कि, तुम्हारी यह उंगलियां डायन आकर टेढ़ी करती है ।तुम झूठ कहते हो कि रसप्रिया बजाते समय टेढ़ी हो गई है। मिरदंगिया का अब सबने साथ छोड़ दिया है केवल म्रदंग ने ही उसका साथ दिया है। वह फिर से मृदंग बजाने की कोशिश करता है पर टेढी उंगलियों की वजह से उसका ताल टूट जाता है। लेकिन उसी समय सुमधुर आवाज में किसी ने रसप्रिया की पंक्तियां गायी तो उसके शरीर में कंपन हो गया और उसकी उंगलियां मृदंग बजाने लगी। उसकी आवाज सुनकर गांववालों को लगा कि कोई पागल ही गा रहा है। मोहना झाड़ी के पीछे बेताल होकर गीत गा रहा था उसे देखकर मिरदंगिया झूम उठा। मिरदंगिया ने उसे पूछा की तुमने यह गीत कहां से सीखा? तब मोहना कहता है कि मेरी मां सुबह गीत गाती है वही सुनकर सीखा हूं। मिरदंगिया मोहना से उसके मां बाप के बारे में पूछता है तो मोहना ने कहा कि पिताजी नहीं है मां बाबू लोगों के यहां पिसाई– कुटाई का काम करती है। मोहना ने मिरदंगिया से उसके मां से मिलने को कहा पर मिरदंगिया ने इनकार कर दिया। मिरदंगिया मोहना को रसप्रिया सिखाता है ताकि यह कला कहीं समाप्त न हो जाए।

इस प्रकार हिंदी कहानी साहित्य में फणीश्वरनाथ रेणु जी ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण करनेवाले अग्रणी कथाकारों में से एक है। उन्होंने अपनी कहानियों में संपूर्ण ग्रामीण समाज के हर पहलू को उजागर किया है। जिसमें भारतीय ग्रामीण समाज की अनेक समस्याएं, लोक संस्कृति एवं लोकगीत का धीरे–धीरे ओझल होना, लोक परंपरा का महत्व, आँचल विशेष का वर्णन किया है। साथ ही लोक परंपरा के प्रति गहरी चिंता का भाव रसप्रिया कहानी में मिरदंगिया के माध्यम से प्रस्तुत किया है। रेणु जी ने गांव समाज से जुड़कर खुद देखा अनुभव किया और बाद में उन्हीं विषयों को यथार्थता से चित्रित किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :– (1)स्वतंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास–डॉ.कांति वर्मा, पृष्ठ क्रमांक –194।(2)आंचलिकता, यथार्थवाद और फणीश्वरनाथ रेणु–डॉ.सुवास कुमार, पृष्ठ क्रमांक– 27।(3)साहित्य भारती–संपा. डॉ.अजय टेंगसे, वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, प्रथम संस्करण –2013, पृष्ठ संख्या –119।(4)वही, पृष्ठ क्रमांक–120।